CMER & TI द्वारा में आयोजित प्रशिक्षण के समापन एवं प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 9 अप्रैल 2024, मंगलवार	समय : 10.00 AM	स्थान : जोरहाट, असम

- असम कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति **डॉ. बिद्युत चंदन डेका जी**,
- केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलुरु के मुख्य कार्यकारी अधिकारी **श्री पी. शिवकुमार जी,**
- केंद्रीय मुगा इरी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की निदेशक **डॉ. के.एम विजया कुमारी जी**,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- संस्थान के सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारीगण,
- नवनियुक्त वैज्ञानिकों एवं प्रशिक्षकगण,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- उपस्थित देवियो और सज्जनों,

आप सभी को मेरा नमस्कार!

केंद्रीय रेशम बोर्ड के प्रशिक्षण समापन समारोह में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं केंद्रीय रेशम बोर्ड के अधिनस्थ केंद्रीय मुगा एरी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

सर्वप्रथम मैं केंद्रीय रेशम बोर्ड के नवनियुक्त वैज्ञानिकों को भर्ती प्रक्रिया और प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। आपका चयन आपकी शैक्षणिक उत्कृष्टता और रेशम उद्योग के विकास में योगदान देने की क्षमता का प्रमाण है।

रेशम भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में एक ऐसा धागा है, जो अपनी सुंदरता और कालातीत आकर्षण से अपनी चमक बिखेरता। यह "वस्त्रों की रानी" के रूप में विख्यात है, क्योंकि यह एक मूल्यवान कपड़ा है।

मित्रो,

भारत में रेशम एक वस्त्र ही नहीं, बल्कि एक संस्कृति है, जो कभी राजा-महाराजाओं की राजसी पोशाक थी। आज भी यह सभी वर्गों में उसव एव अन्य कार्यक्रमों में शान का प्रतीक है। भव्य बनारसी से लेकर नाजुक चंदेरी तक, चमकदार मैसूर रेशम से लेकर स्वदेशी असमिया मुगा तक, भारतीय रेशम ने अपनी उत्कृष्ट शिल्प कौशल से दुनिया को मंत्रमुग्ध किया है। पूर्वोत्तर की हरी-भरी पहाड़ियों से लेकर दक्षिण के मैदानों तक, रेशम उत्पादन आजीविका प्रदान कर समुदायों को सशक्त बनाता है और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करता है।

रेशम सदियों से हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और अद्‌वितीय शिल्प कौशल का प्रतीक रहा है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां परंपरा नवीनता से मिलती है, इतिहास आधुनिकता के साथ जुड़ता है, और लाखों लोग अपनी आजीविका पाते हैं। देश भर में नौ मिलियन से अधिक परिवार रेशम उत्पादन से जुड़े हुए हैं।

मित्रो,

रेशम हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला के रूप में कार्य करता है। रेशम उद्योग ग्रामीण अंचलों में निवास करने वाले लोगों तथा गरीब तबके के लोगों को स्वरोजगार प्रदान करता है। यह महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है।

रेशम उत्पादन में वृद्धि से बुनकरों को भी लाभ मिलता है। भारतीय बुनकर अपनी कला से रेशम के धागों से सुंदर और आकर्षक उत्पाद तैयार करते हैं। बनारस की रेशमी साड़ियां, असम की मुगा और पाट की "मेखला चादर" देश के बुनकरों की शिल्पकारिता का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

बुनकर न केवल सूत बुनता है, बल्कि उसमें उसकी कड़ी मेहनत, संवेदना और भाव भी शामिल होता है। रेशम बुनाई में उन क्षेत्रों विशेष की जावन रातियों तथा संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है, जहां यह बुनी जाती है।

हथकरघे पर बुनी हुई पारंपरिक साड़ियां बुनावट एवं डिज़ाइन की समृद्धि के लिए अलग ही स्थान रखती हैं, जो सौन्दर्य एवं गुण में हमारे पुरातन गौरव को प्रतिष्ठित करती हैं। हथकरघे की बुनाई जीवन्त कला का बहुमुखी एवं सृजनात्मक प्रतीक है। आज, भारतीय रेशम खास तौर से हथकरघा उत्पादों के क्षेत्र में उत्कृष्ट तो है ही, साथ ही विश्वसनीय भी है।

रेशम उत्पादों के बाजार का विकास करना भी आवश्यक है। मैं समझता हूं कि रेशम उत्पादों की प्रदर्शनी के आयोजन पर भी जोर दिया जाना चाहिए। इससे अधिक से अधिक ग्राहकों को रेशम उत्पादों के प्रति आकर्षित करने में सहायता मिलेगी।

मुझे खुशी है कि सरकारी योजना के तहत रेशम बुनकरों को रेशम उत्पादों की बिक्री के लिए उटलेट प्राप्त हो रहे हैं। आज के डिजीटल मार्केट में रेशम उत्पादों के ऑनलाइन प्रचार और बिक्री के लिए अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसे ई-प्लेटफॉर्म का भी उपयोग किया जाना चाहिए।

मित्रो,

रेशम उत्पादन एक श्रम आधारित और उच्च आय देने वाला उद्योग है। इसलिए इसके उत्पाद के अधिक मूल्य मिलते हैं। यह देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण साधन है। इसके अलावा रेशम के उत्पादों का विदेशों में भी अच्छा बाजार है, जिससे निर्यात की अधिक संभावनाएं हैं।

भारत सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन परिवार के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिये सरकार प्रतिबद्ध है। सरकार द्वारा क्रियान्वित योजनाओं का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण, भूमिहीन किसानों एवं आदिवासी क्षेत्रों के लोगों को आजीविका के बेहतर साधन और अवसर उपलब्ध करना है।

रेशम उद्योग तम पूंजी और सीमित संसाधनों में ग्रामीणों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने का बहतर विकल्प है। कृषि आधारित इस उद्योग से हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित भी किया जा सकता है।

रेशम उद्योग में रोजगार की विशाल संभावनाएं को देखते हुए तथा देश को आर्थिक विकास के पथ पर ले जाने की इसकी क्षमता को देखते हुए देश की आजादी के बाद ही भारत सरकार ने केंद्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना की थी। आज देश भर में केंद्रीय रेशम बोर्ड के अंतर्गत कई औद्योगिक संस्थान और प्रशिक्षण केंद्र हैं, जो रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने में महतवपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि केंद्रीय सिल्क बोर्ड ने अपनी स्थापना के बाद से जबरदस्त काम किया है और भारत को वैश्विक रेशम उत्पादन के शिखर पर पहुंचाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। यह बोर्ड के अधिकारियों और कर्मचारियों की प्रतिबद्धता और समर्पण का प्रमाण है।

अपने 75 वर्षों के गौरवशाली इतिहास के साथ, सेंट्रल सिल्क बोर्ड भारतीय रेशम उद्योग में नवाचार और परिवर्तन लाने में सबसे आगे रहा है।

मुझे खुशी है कि रेशम उत्पादन के विकास के लिए शीर्ष निकाय के रूप में, बोर्ड रेशम उत्पादन में उत्पादकता, गुणवत्ता और स्थिरता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो हमें सीमाओं को पार करने और अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए प्रेरित करता है।

पिछले 15 वर्षों में बोर्ड ने 36000 मेट्रिक टन से अधिक के कुल कच्चे रेशम उत्पादन को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 2030 तक 50000 मेट्रिक टन के लक्ष्य को हासिल कर लेगा। वैज्ञानिक के रूप में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण हैं।

मित्रो,

भारत चीन के बाद दुनिया में कच्चे रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। इस देश को दुनिया में पांच अलग-अलग प्रकार के रेशम का उत्पादन करने वाला एकमात्र देश होने का अनूठा गौरव प्राप्त है।

भारत सरकार देश में रेशम उद्योग को बढ़ावा देने तथा ग्रामीणों को प्रोत्साहित करने के लिए कल्पव-क्ष सामान्य विस्तार योजना, मलबरी स्वावलंबन योजना, रेशम विकास एवं विस्तार जैसे कई कल्याणकारी योजना चला रही है।

रेशम उत्पाद की घरेलू मांग को पूरा करने और मूल्यवर्धन एवं आयात विकल्प के लिए भारत सरकार ने हाल के वर्षों में कई मोर्चों पर अनुसंधान और विकास पर जोर दिया है। सरकार शहतूत की किस्मों का विकास, बेहतर गुणवत्ता वाले रेशमकीटों के विकास पर भी जोर दे रही है। इसके अलावा नवीन तकनीकों से रेशमी धागों के उत्पादन में गुणवत्ता सुधार किया जा रहा है। कौशल विकास तथा तकनीकी हस्तातरण का भी निरंतर प्रयास किया जा रहा है।

भारत सरकार का पूर्वोत्तर राज्यों में रेशम उद्योग के विकास पर विशेष ध्यान है। यहां रेशम के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कई अनुसंधान और विकास कार्य किए जा रहे हैं।

अनुवंशिकी और डेटा अनुक्रमण का उपयोग कर रेशम कीट का अध्ययन किया जा रहा है। इसके अलावा किसानों को बीमारी फैलने से पहले एहतियाती उपाय करने के लिए भू-स्थानिक तकनीक के माध्यम से सचेत किया जाता है।

पूर्वोत्तर राज्यों में शहतूत, मुगा और ऐरी रेशम की अड़तीस से अधिक परियोजनाएं लागू की गई हैं। केंद्रीय रेशम बोर्ड के तहत रेशम उत्पादन के लिए असम, नागालैंड और मेघालय में स्थापित बीज बुनियादी ढांचा इकाइयां और असम में स्थापित एरी स्पिन रेशम मिलें सक्रियता से कार्य कर रही है। लेकिन मैं समझता हूं कि इस दिशा में हमें और अधिक जोर देना होगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 1920 में अपनी स्थापना के बाद से असम टेक्सटाइल इंस्टीट्यूट वस्त्रों में तकनीकी ज्ञान प्रदान कर रहा है। यह संस्थान छात्रों को हथकरघा, पावरलूम आधारित उद्योग, पेट्रो रसायन उद्योग, सामग्री परीक्षण उद्योग, फाइबर डिवीजन, यार्न डिवीजन, आदि में नौकरी दिलाने में सक्षम रहा है।

मित्रो,

केंद्र के "मेक इन इंडिया" अभियान के नक्शेकदम पर चलते हुए कई राज्यों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपने पारंपरिक और स्वदेशी वस्त्रों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया है।

मैं आप सभी से आग्रह करूंगा कि आप नए और आकर्षक डिजाइन लेकर आएं और हमारे पारंपरिक परिधानों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बढ़ावा दें। हमें अपने राज्य के स्वामित्व वाले ब्रांडों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

हमारे राज्य की संस्कृति और पहचान के प्रतीक गमोछा को केंद्र सरकार से भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग मिला है। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। इस दिशा में मैं आपको काम करने के लिए प्रोत्साहित करूंगा ताकि हम असमिया पारंपरिक कपड़ों के लिए भौगोलिक संकेत (जीआई) प्राप्त कर सकें।

हमें अपने मुगा, एरी, पाट सिल्क के कपड़ों को सुर्खियों में लाना होगा। हमें उत्पादों की व्यावसायिक व्यवहार्यता बढ़ाने के लिए फैशन डिजाइनरों के साथ गठजोड़ करना होगा।

मित्रो,

मैं समझता हूं कि असम में रेशम उत्पादन में देश का अव्वल राज्य बनने की क्षमता है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए ग्रामीणों के साथ-साथ युवाओं को भी रेशम उद्योग के लिए प्रोत्साहित करना होगा। रेशम उत्पादन में नई तकनीक उपयोग में लाने होंगे। मुझे विश्वास है कि इस कार्य में केंद्रीय रेशम बोर्ड के नए वैज्ञानिक महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप सभी नवनियुक्त वैज्ञानिकों को पहले ही देश भर के केंद्रीय रेशम बोर्ड के सभी संस्थानों और क्षेत्रीय स्टेशनों में "वैज्ञानिक-बी (आर एंड एस)" के स्तर पर तैनात किया गया है।

आप सभी ने बोर्ड के विभिन्न मुख्य संस्थानों और संबद्ध इकाइयों में एक महीने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। “सीएसटीआरआई बैंगलोर”, जहां आप कोकून के बाद की तकनीकी गतिविधियों और हाल के विकास से परिचित हुए। इसके बाद “सीटीआरटीआई रांची” और “सीएसआरटीआई बेहरामपुर” में तसर और शहतूत सेरीकल्चर और अंत में, सीएमईआरटीआई लहदोईगढ़ में मुगा और एरी रेशम उत्पादन के बारे में जाना।

इस प्रशिक्षण ने निःस्संदेह आपको रेशम उद्योग की वर्तमान स्थिति और क्षेत्र-स्तरीय अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकता के बारे में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की है।

अपनी-अपनी सेवाएं शुरू करने से पहले मैं आप सभी नए वैज्ञानिकों से आग्रह करता हूं कि आप अपने पद की जिम्मेदारियों को पहचानें और रेशम उत्पादन के शोध एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान दें।

आपको देश भर में रेशम उत्पादन के लाभार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने वाले तकनीक लाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण अनुसंधान और विकास गतिविधियों के संचालन का काम सौंपा गया है।

आप में से प्रत्येक कपड़ा प्रौद्योगिकी, कपड़ा रसायन विज्ञान और फाइबर विज्ञान में अपनी भूमिकाओं में विशेषज्ञ हैं। मुझे विश्वास है कि आप अपने लक्ष्यों को केंद्रीय रेशम बोर्ड के मिशन के साथ संरेखित करेंगे।

आप प्रतिबद्धता के साथ अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करेंगे और रेशम उत्पादन से जुड़े लोगों की आजीविका को आसान बनाने और उनके आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण पर ध्यान करेंगे। केंद्रित करके, आप वैश्विक स्तर पर भारतीय रेशम की प्रतिष्ठा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

आशा करता हूं कि आपका समर्पण, जुनून और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता निःस्संदेह भारतीय रेशम उद्योग को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी।

अंत में मैं केंद्रीय रेशम बोर्ड में एक सफल और पूर्ण कैरियर के लिए आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद!

जय हिन्द!